दैनिक नवज्योति

अपना शहर अपने लोग

पहले तोड़ी सगाई फिर चली समाज को बदलने

हर बेटी का यह अधिकार मिले शिक्षा सम्मान और प्यार...

बाड़मेर से हुई शुरुआत

विकल्प की शुरुआत बाड़मेर जिले से हुई। जहां कार्यशाला के लिए गए उषा और कुछ अन्य युवाओं को वहां की लड़कियों ने कहा कि पुरुषों और बड़ों के पास तो अपनी बात कहने की बहुत सी जगहें होती हैं, लेकिन हम लड़कियों की बात सुनने वाला कोई नहीं होता। आप लोग ऐसी संस्था बनाओ जो हमारी बात सुने। बस, फिर क्या था ? वहां की लड़कियों ने ही बात कहने के इस नए जरिए को जीवन का विकल्प माना और इसे विकल्प का ही नाम दे दिया। इसके बाद यह अन्य जिलों तक भी कार्य करने लगी।

डॉ. मधु बैनर्जी/जोधपुर

कभी अपने ही बाल विवाह के खिलाफ आवाज उठाने वाली किशोरी ने जीवन की कठिनाइयों का सामना किया और अपने जैसी दूसरी लड़कियों की मदद करने की कसम खाई। बस, इस एक पल ने ही उसके जीवन की दिशा बदल दी और आज वह लड़कियों और महिलाओं के लिए स्वयंसेवी संस्था चलाती है। कई साल गुजरने के बाद भी उसके भीतर स्त्रियों के हक के लिए लड़ने की आग आज भी उसी तरह कायम है। कभी एकल महिलाओं को अधिकार दिलाने की लड़ाई लड़ने वाली इस युवती ने अब सहमी और दबी हुई लड़कियों और महिलाओं को अपनी बात कहने और अपने दर्द से मुक्ति पाने का एक विकल्प दे दिया है। जी हां, यह युवती है ऊषा। जो पिछले करीब 17 साल से महिलाओं और लड़कियों की स्थिति सुधारने के लिए कार्य कर रही है।

मूलतः चित्तौड़गढ़ निवासी ऊषा वर्तमान में जोधपुर में रह रही है। समाज सेवा की शुरुआत तो बचपन से ही हो गई थी जब वह स्कूल जाने के साथ ही अपने शहर चित्तौड़गढ़ में घरों में काम करने वाली महिलाओं के बच्चों को निःशुल्क पढ़ाती थी। वक्त गुजरने के साथ शहर की हरिजन बस्तियों आदि में लड़कियों को पढ़ाने का काम भी किया। लेकिन उस समय वहां किसी संस्था से जुड़ने का अवसर नहीं मिला। यह मौका उन्हें पहली बार मिला तो उदयपुर की आस्था संस्था के साथ, जिससे जुड़कर उन्होंने आदिवासी महिलाओं और एकल महिलाओं के अधिकारों के लड़ाई लड़नी शुरू की। करीब छह साल तक संस्था के साथ चित्तौड़ व उदयपुर के गांवों में जाकर आदिवासी महिलाओं के जंगल व जमीन के हक दिलाने के लिए जागरुकता जगाने के प्रयास किए। वे कहती हैं कि उस समय एकल महिलाओं को घर-परिवार और समाज में स्वीकृति नहीं दी जाती थी। वे रंगीन कपड़े नहीं पहन सकती थी। शुभ अवसरों पर उनकी उपस्थिति वर्जित रहती थी। सजने-संवरने की भी मनाही थी। इससे उनका जीवन निराशा में डूब जाता था। कई जगह तो उन्हें डायन तक कहा जाता था। उस समय हम लोगों ने एकल नारी शक्ति संगठन बनाया। एक महिलाओं की पेंशन बढ़ाने, उनके बच्चों को निःशुल्क पढ़ाने, उनकी बेटियों की शादी में आर्थिक सहायता देने आदि मुद्दों पर सरकार से मांग की। महिलाओं को मेंहदी लगाने, बिंदी लगाने और रंगीन वस्त्र आदि पहनने के लिए भी जागरूक किया। इसके बाद विशाखा संस्था से जुड़कर महिला सलाह और सहायता केंद्रों के कॉर्डिनेशन का कार्य किया। फिर पांच-छह मित्रों ने मिलकर विकल्प संस्था का गठन किया। जिसके तहत मूलतः जोधपुर, उदयपुर, जालोर और बाड़मेर जिले में फील्ड वर्क किया जाता है। हालांकि जेंडर आधारित हिंसा रोकने के लिए राज्य के कुल नौ जिलों में जागरुकता जगाने का कार्य होता है।

बाल विवाह का किया विरोध

निजी जीवन के बारे में ऊषा कहती हैं कि दसवीं कक्षा में थी तब मेरी सगाई कर दी गई और दो महीने बाद ही शादी तय हो गई। आस-पास के परिवेश में महिलाओं की खराब स्थिति देखकर मैं सोचने लगी कि ये लोग अशिक्षा के चलते मजबूरीवश लड़ नहीं पाती हैं और हिंसा तथा अपमान सहमे को मजबूर हैं। यदि अभी शादी हुई तो मेरी पढ़ाई भी छूट जाएगी और मुझे भी ऐसा ही जीवन बिताना पड़ेगा। इसलिए मैंने अपने बाल विवाह का विरोध किया। इसके लिए परिवार और समाज सबका सामना करना पड़ा। बहुत प्रयास किए तब मेरी सगाई टूटी। इसके बाद समाज के ताने और परिवार की मजबूरी मेरे सामने आ खड़ी हुई। बस, तभी से खुद की पढ़ाई का खर्चा उठाने के लिए एक स्कूल में बच्चों को पढ़ाना शुरू कर दिया। इसी तरह बारहवीं की और फिर आगे की पढ़ाई स्कूल में पढ़ाते और कोरियर कंपनी में काम करते हुए प्राइवेट स्टूडेंट के तौर पर की। इसी तरह संघर्ष करते हुए एमए किया और फिर रूरल डवलपमेंट कोर्स में डिप्लोमा। मैं नौकरी करने की बजाय समाज के लिए कुछ करना चाहती थी। इसलिए इसी रास्ते को चुना और आज मैं इस पर चलकर बहुत खुश हूं।